www.thearyasamaj.org

ओ३म्

वर्ष : 28 अंक : 7, 25 अगस्त, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि संवत् 1,97,29,49,114

आर्य वीर विजय

अमर शहीद पं. लेखराम स्मृति मासिक पत्रिका

हरियाणा-दिल्ली-पंजाब-उत्तर प्रदेश-उत्तरांचल-राजस्थान-मध्यप्रदेश-गुजरात-महाराष्ट्र-हिमाचल प्रदेश

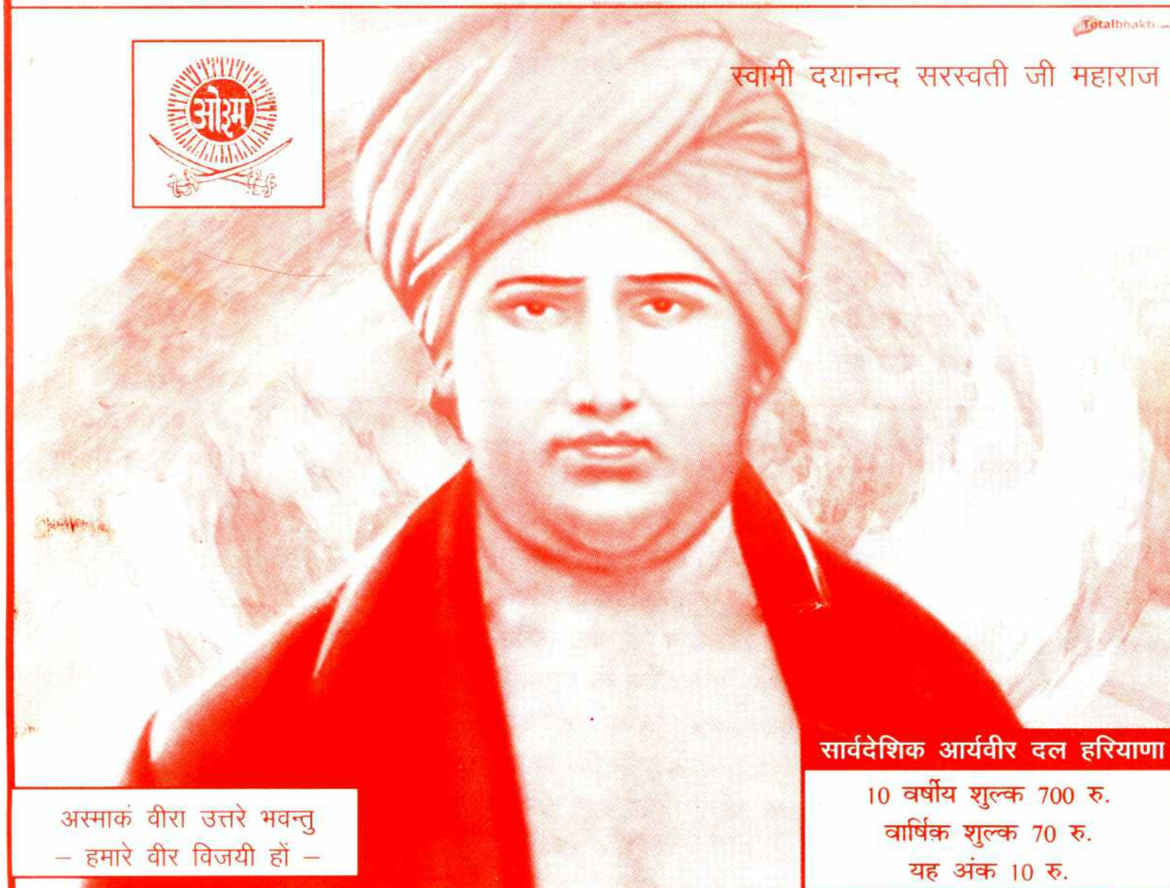

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु
– हमारे वीर विजयी हों –

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा

10 वर्षीय शुल्क 700 रु.
वार्षिक शुल्क 70 रु.
यह अंक 10 रु.

विज्ञापन की दरें (वार्षिक)

अन्तिम पृष्ठ	7000/–
अन्तिम पृष्ठ रंगीन आधा	4000/–
अन्तिम अन्दर का रंगीन	6000/–
अन्दर के रंगीन पृष्ठ	4000/–
अन्दर का आधा (सादा)	2500/–

एक विज्ञापन पट्टी 250/– प्रति पृष्ठ, प्रति अंक

www.thearyasamaj.org

फूलों का गुलदस्ता

संकलनकर्ता- मनोहर लाल, प्रधान सम्पादक

1. मैंने इस संसार में परीक्षा करके निश्चय किया है कि जो मनुष्य धर्मयुक्त व्यवहार में ठीक-ठाक वर्तता है, उसको सर्वज्ञ सुख लाभ और जो विपरीत बर्तता है वह सदा दुःखी होकर अपनी हानि कर लेता है। **(ऋषि दयानन्द)**
2. जीवन में संयम और सदाचार न हो तो पुस्तकों का ज्ञान कुछ काम नहीं आता। **(अज्ञात)**
3. प्रत्येक कार्य के आरम्भ में भगवान को याद करो। **(स्वामी वेदानन्द)**
4. पुष्पित व सुगन्धित एक ही महान वृक्ष से सारा वन उसी प्रकार सुगन्धित और सुरभ्य हो जाता है, जैसे सुसन्तान से कुल। **(चाणक्य)**
5. जब तुम्हारे अपने दरवाजे की सीढ़ियां मैली हों तो अपने पड़ोसी की छत पर पड़ी गन्दगी का उलाहना मत दो। **(कन्फयूशियस)**
6. उत्तम व्यक्ति, दूसरों की उन्नति से दुःखी नहीं होता। नीच व्यक्ति दूसरे की उन्नति से दुःखी होता है। **(माघ)**
7. विद्या का अन्तिम लक्ष्य चरित्र निर्माण है। **(अज्ञात)**
8. आस्तिकता समस्त पुण्यों की खान है और नास्तिकता ही सब दुःखों की जननी है। **(स्वामी सत्यानन्द)**
9. यदि हमें अपने और दूसरे के सुख-दुःख में भेद प्रतीत होता है तो समझो अभी हम ईश्वर से बहुत दूर हैं। **(रामतीर्थ)**
10. धन का प्रेम सब पापों की जड़ है।

आर्य वीर विजय

सम्पादक मण्डल

मनोहर लाल आनन्द
प्रधान सम्पादक

सतीश कौशिक
व्यवस्थापक
☎ : 9312083458

उमेद सिंह शर्मा
संचालक
☎ : 9868956786

देश बंधु आर्य
संरक्षक
☎ : 9811140360

डॉ. (श्रीमती) विमल महता
संरक्षिका
☎ : 9350266601

अजीत कुमार आर्य
संरक्षक
☎ : 09794113456

श्री शिव दत्त आर्य
संरक्षक
☎ : 9810638622

संजीव कुमार मंगला
कानूनी परामर्शदाता
☎ : 9812271456

समस्त अवैतनिक

युवा-शक्ति का सिंहनाद

बचपन में रोना ही हमारा बल रहता है, किन्तु यौवन के द्वार पर पहुँचते ही हमें भुजाओं और बुद्धि की सहायता से हमने क्या नहीं किया? फिनसिया, असीरिया, बोविलोनिया, मिस्त्र, ग्रीस, रोम, टर्की, इंग्लैंड, रूस, जर्मनी, चीन, जापान, हिन्दुस्तान-चाहे जिस देश का इतिहास पढ़कर देखो, देखोगे कि हर देश के इतिहास के हर एक पृष्ठ पर हमारी कीर्ति ज्वलन्त अक्षरों में लिखी हुई है। हमारी सहायता से सम्राट सिंहासन पर बैठे और हमारे संकेत से सिंहासन छोड़ कर भाग खड़े हुए। जिस तरह हमने एक तरफ प्रेम के आँसुओं से ताजमहल निर्माण किया है, उसी तरह दूसरी तरफ अपने हृदय के रक्त से पृथ्वी को रंजित किया है। हमारी संयुक्त शक्ति लेकर समाज, राष्ट्र, साहित्य, कला, विज्ञान, युग-युग में, देश देश में उन्नत हुआ है। फिर हम ने जब कराल मूर्ति धारण कर ताण्डव नृत्य आरम्भ किया है, उसके एक एक पद विक्षेप से कितने समाज, कितने साम्राज्य, धूल में मिल गये हैं। (राष्ट्र वन्दना से साभार) ▪

सत्यार्थ प्रकाश - *मानव को विशुद्ध मानक तपस्वी, ऋषि या देवरूप में, निर्माण वाला यह जीवनशास्त्र हैं। विश्वधर्म, विश्व शान्ति और विश्वबंधुत्व के प्रससारार्थ उसे सच्चे अर्थ में प्रकट करने का यह विश्वकोश है।*

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय

स्वतन्त्रता दिवस

15 अगस्त, 2013 को 67वाँ स्वतन्त्रा दिवस भारत के कोने-कोने और विदेशों में बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। यह दिवस भारतवासियों के लिये बड़ा ही महत्व का दिन है। इसी दिन भारत को अंग्रेजों के शासन से मुक्ति मिली। यह दिवस बहुत बलिदानों के पश्चात् देखने को मिला। इस दिन शहीदों को याद करके उनके जीवनों से प्रेरणा लेकर भारत को उसके खोये हुए गौरव को पुनः प्राप्त करने के लिये हमें दृढ़ व्रत लेकर हिम्मत के साथ देश निर्माण में जुट जाना चाहिये।

हमारे देश के राजाओं के संगठित न होने और फूट के कारण विदेशी आक्रमणकारी आते रहे और लूट पाट करके जाते रहे। यह शुरु की स्थिति थी। फिर कुछ विदेशी आक्रमणकारी वंश यहाँ पर राज भी करते रहे। इनमें एक गुलाम वंश भी था जिसने यहाँ पर राज्य किया अर्थात् हम गुलामों के भी गुलाम बने। सब से ज्यादा देर तक भारत में मुगल वंश ने राज्य किया।

आये थे अंग्रेज भारत में व्यापार करने के लिये लेकिन जब उन्होंने देखा कि भारतीय संगठित नहीं और आपस में लड़ते रहते हैं तो इसका पूरा फायदा उठाने की ठानी। इस्ट इण्डिया कम्पनी जो यहाँ पर व्यापार कर रही थी। उसने इस स्थिति का लाभ उठाने के लिये यहाँ पर फौज रख ली और धीरे-धीरे अपना अधिकार क्षेत्र बढ़ाने लग गई। फूट का फायदा उठा कर कुछ क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया और अपना उस पर राज्य स्थापित कर लिया। यह सिलसिला उन्होंने जारी रखा और अपने राज्य की सीमाऐं बढ़ाने, फौज बढ़ाने और कर वसूल करने लग गये। आखिरकार उन्होंने भारत पर अपना शासन स्थापित कर लिया।

अंग्रेज़ी राज्य से तंग आ कर जनता और यहाँ के राजाओं में आक्रोश बढ़ता गया और वह अंग्रेजी शासन को समाप्त करने की योजना बनाने लग गये। फौजों में भी उनके विरुद्ध आक्रोश बढ़ने लगा। इस सब का परिणाम था 1857 में देश को स्वतन्त्र कराने की क्रान्ति। चूंकि यह निश्चित तिथि से पहले शुरु कर दी गई, पूरी तरह संगठित न होने और अनुशासित न होने से यह विफल हो गई। कुछ क्षेत्रों में तो इसने अच्छी सफलता प्राप्त कर ली, पर कुछ देसी रियासतों की गद्दारी के कारण असफल रही। देसी कुछ राजे अपनी फौज के साथ अंग्रेजों के साथ मिल जाने के कारण बनी हुई बात बिगड़ गई और अन्त में हम हार गये। इसके बाद अंग्रेजों ने आतंक मचा दिया। यहां के लोगों और नेताओं को खूब यातनायें दी गई। उन्होंने इतना आतंक फैला दिया कि लोगों के अन्दर अंग्रेजों के विरुद्ध बोलने का साहस तक तोड़ कर रख दिया। 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के विफल हो जाने के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारत की सत्ता इस्ट इण्डिया कम्पनी से अपने हाथों में ले ली और राज काज खुद संभाल लिया। 1 नवम्बर सन् 1858 को महारानी विक्टोरिया ने घोषणा की जो इस प्रकार थी-

"मैं भारत के लोगों को विश्वास दिलाती हूँ कि हमारी अपनी मान्यताओं के कारण किसी के प्रति किसी प्रकार का पक्षपात नहीं किया जायेगा और किसी के साथ ज्यादती नहीं की जायेगी। इसके विरुद्ध सबको समान रूप से कानूनी संरक्षण प्राप्त होगा और अपने अधीन समस्त कर्मचारियों को हम सावधान करते हैं कि यदि किसी ने हमारी प्रजा के धार्मिक विश्वास और पूजा विधि में दखल दिया तो उसे हमारे कोप का शिकार होना पड़ेगा।"

इस घोषणा पर ऋषि दयानन्द जी ने कहा था- "कोई कितना ही करे जो स्वदेशी राजय होता है व सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतन्तर के आग्रहरहित, अपने पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है। क्या उस समय जब न तो इण्डियन नैशनल कांग्रेस का जन्म हुआ था और महात्मा गांधी आदि नेता राजनीति में आये नहीं थे, उस समय इस प्रकार की घोषण करना जाहिर करती है कि ऋषि दयानन्द के मन में कितनी निर्भीकता और देश प्रेम की ज्वाला धधक रही थी।

1857 के पश्चात लगातार स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष चलता रहा। कांग्रेस की स्थापना 1885 में एक अंग्रेज द्वारा की गई थी। शुरु-शुरु में तो यह अंग्रेजी शासन के गुण गाण के गीत गाती रही और कुछ रियायतें मांगती रही। जैसे-जैसे समय बीतता गया उस में देश भक्त भारतीय भी शामिल हो गये तब स्वतन्त्रता की आवाज इसके मंचों से गूंजने लगी, हजारों इस पुणीत यज्ञ में अपने जीवन की आहुति देते रहे। कई बार सत्याग्रह भी हुए और अन्त में 15 अगस्त 1947 को देश को स्वतन्त्रता मिल गई। आज आवश्यकता इस आजादी को कायम रखने की है। देश इस समय आर्थिक, राजनैतिक और सुरक्षा की गम्भीर समस्याओं से जूझ रहा है। हमारा सबका कर्तव्य है कि इस समय मिलकर इन समस्याओं का सामना करें और देश के दुश्मनों के षडयन्त्रों को विफल करें।

– सम्पादक

www.thearyasamaj.org

बाग़ी दयानन्द

(गतांक से आगे)

पंजाब के गवर्नर लार्ड री ने सन् 1876 में ईसाई मिश्नरियों के एक शिष्टमण्डल को प्रिंस ऑफ वेल्स के सामने प्रस्तुत करते हुए कहा था–

"They are doing in India more than all those civilians, soldiers, judges and governors your highness has met."

अर्थात् जितना काम आपके सिपाही, जज, गवर्नर और दूसरे अफसर कर रहे हैं, उससे कहीं अधिक ये पादरी लोग कर रहे हैं।

भारतीय स्वाधीनता के प्रथम युद्ध की समाप्ति के दो वर्ष के बाद इंग्लैण्ड के तत्कालीन प्रधानमन्त्री लार्ड पामर्स्टन ने कहा था–

"It is not only our duty but in our own interest to promote the diffusion of christianity as far as possible throughout the length and breadth of India."

– Christianity and Government of India by Mayhew, Page 194.

अर्थात् यह हमारा कर्त्तव्य ही नहीं, अपितु हमारे अपने हित में भी है कि भारतभर में उसके एक कोने से दूसरे कोने तक ईसाइयत का अधिक–से–अधिक प्रसार हो।

अंग्रेजी राज्य और ईसाइयत दोनों के हितों को समन्वित करते हुए, ईस्ट इण्डिया कम्पनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के तत्कालीन चेयरमैन मिस्टर मेंगल्स ने ब्रिटिश पार्लियामेंट में कहा था।

"Providence has entrusted the extensive empire of Hindustan to England in order that the banner of Christ should waine triumphant from one and to the other. Every one must exert all his strength that there should be no dialatoriness on any account in continuing in the country the ground work of making all Indians Christians."

अर्थात् विधाता ने हिन्दुस्तान का विशाल साम्राज्य इंग्लैंड को इसलिए सौंपा है कि ईसामसीह का झण्डा देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक फहराता रहे। प्रत्येक ईसाई का कर्तव्य है कि समस्त भारतीयों को अविलम्ब ईसाई बनाने के महान् कार्य में पूरी शक्ति के साथ जुट जाए।

ऋषि दयानन्द के प्रादुर्भाव से पहले तक मुसलमानों और ईसाइयों को तो धर्म–परिवर्तन की छूट थी, किन्तु हिन्दुओं को धर्मान्तरण करके परावर्तन, अर्थात् अपने घर लौटने की इजाजत नहीं थी, इसलिए हिन्दुत्व की निन्दा करनेवाले लोग निश्चिन्त थे कि हिन्दू अपना सुधार भले ही करता हो, बदले में हमारी निन्दा करने का साहस उसे नहीं होगा, परन्तु इस मेधावी और योद्धा संन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नहीं, जो बात राममोहन राय तथा महादेव गोविन्द रानाडे के ध्यान में नहीं आई थी, उस बात को लेकर दयानन्द और उसके शिष्य आगे बढ़े और उन्होंने घोषणा की कि धर्मच्युत हिन्दू प्रत्येक अवस्था में अपने धर्म में वापस आ सकता है। इतना ही नहीं, अहिन्दू भी, यदि चाहें तो हिन्दू धर्म में प्रवेश पा सकते हैं।

श्रीकृष्ण और ऋषि दयानन्द दानों के जीवनदर्शन में ज्ञान और कर्म का समन्वय था। श्रीकृष्ण ने घोषणा की–

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

–गीता 4/8

सज्जनों की रक्षा, दुष्टों के संहार तथा धर्म की स्थापना के लिए ही समय–समय पर मेरे जैसे महापुरुष जन्म लेते हैं।

ऋषि दयानन्द इससे आगे बढ़ जाते हैं और आदेश की भाषा में कहते हैं–

"मनुष्य उसी को कहना जो अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं, किन्तु अपने सर्वसामर्थ्य से धर्मात्माओं की रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी का नाश, अवनति और अप्रियाचरण सदा किया करे। इस मनुष्यरूप धर्म को कभी न छोड़े।"

यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी, जाग्रत् देश और जाति का समरनाद था। हिन्दुत्व और भारतीयता का दयानन्द–जैसा निर्भीक तथा रणारुढ़ नेता और कोई नहीं हुआ।

रामधारीसिंह दिनकर के अनुसार "केशवचन्द्र सेन और रानाडे की तुलना में दयानन्द वैसे दीखते हैं जैसे

www.thearyasamaj.org

गोखले की तुलना में तिलक। जैसे राजनीति के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज पहले पहल तिलक में प्रत्यक्ष हुआ, वैसे ही धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द में निखरा। ब्राह्म–समाज और प्रार्थनासमाज के नेता अपने धर्म और समाज में सुधार तो ला रहे थे किन्तु उन्हें बराबर यह खेद रहता था कि हम जो कुछ कर रहे हैं, वह विदेश की नकल है। अपनी हीनता और विदेशियों की श्रेष्ठता के ज्ञान से उनकी आत्मा कहीं–न–कहीं दबी हुई थी। इस आत्महीनता के भाव के कारण वे दर्प से नहीं बोल सके। यह दर्प स्वामी दयानन्द में चमका।"

स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का सूत्रपात किया, क्योंकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। जब उनके परम हितैशी और प्रशंसक सर सय्यद अहमद खां ने हिन्दी को 'गवांरु भाषा' कहकर उसका उपहास किया तो स्वामी दयानन्द ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, प्रतापनारायण मिश्र और बालकृष्ण भट्ट जैसे दिग्गजों की उपस्थ्ज्ञति में उर्दू को 'वारविलासिनी' (वेश्या) और हिन्दी को 'कुलकामिनी' बताया। आज वही 'गवांरू भाषा' राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित है और उर्दू के चरित्र के सम्बन्ध में तो स्वयं अलताफ़ हुसैन हाली कह गये हैं–

बुतों की मदद से सब शायरी उर्दू की ममलू है।
शकस्त उर्दू जो पायेगी तो मैं समझूँगा बुत टूटा।।

सन् 1857 में बंगाल नेटिव इन्फैंटरी के सिपाहियों का यह सन्देह निराधार नहीं था कि उन्हें ईसाई बनाने के इरादे से पहले छलपूर्वक उनको जातिभ्रष्ट किया जा रहा है। उनके इस षड्यन्त्र की ही एक कड़ी के रूप में गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूसों की कहानी जगजाहिर है। पिछले पचास वर्ष की शोध ने अब यह पूरी तरह सिद्ध कर दिया है कि 1857 के शुरु में ही भारतीय ईसाइयों को ऐसे कारतूस दिये जाने लगे थे जिन्हें बन्दुक की नली में भरने से पहले मुँह से काटना जरूरी होता था। इससे अनजाने ही गाय की चर्बी का कुछ अंश उनके मुँह में चला जाता था। यदि डमडम के सैनिक कारखाने में, जहाँ ये कारतूर बनते थे, काम करनेवाले किसी निचली जाति के लस्कर ने किसी ब्राह्मण के कान में यह रहस्य न बता दिया होता तो बेचारे सिपाही अनजाने इन कारतूसों का प्रयोग करते रहते और एक दिन अचानक मिश्नरियों द्वारा इस रहस्य का भण्डाफोड़ किये जाने पर उन दिनों की मान्यताओं के अनुसार वे सब एकबारगी जातिभ्रष्ट घोषित कर दिये जाते और तब ईसाई बनने के अलावा उनके पास कोई रास्ता शेष न रह जाता।

यह षड्यन्त्र जानबूझकर रचा गया था। अब ऐसे अनेक दस्तावेज प्रकाश में आये हैं जिनसे विदित होता है कि 29 मार्च 1857 को मंगल पाण्डे की खुली बगावत से पहले जनवरी मास में ही देसी सिपाहियों ने शक होते ही इनकी निष्पक्ष जाँच कराने और उन्हें वापस लेने की माँग उठाना शुरु कर दिया था। सिपाहियों में बढ़ते हुए इस असन्तोष को भाँपकर कुछ ब्रिटिश सेनाधिकारियों ने उन कारतूसों को वापस लेने की माँग का समर्थन भी किया था, किन्तु इन कारतूसों को वापस न लेकर इस छल पर परदा डालने का यत्न किया गया। 1857 के विद्रोह के अधिकृत सरकारी इतिहासकार सर जे. डबल्यू केये ने, जो उन दिनों इण्डिया आफिस के राजनीतिक तथा गोपनीय विभाग का सचिव होने के नाते इन दस्तावेजों से पूरी तरह परिचित था, अपने तीन खण्डों में प्रकाशित तथाकथित शोधपत्र में सफेद झूठ लिख दिया कि इन कारतूसों में किसी प्रकार की ऐसी चरबी का प्रयोग नहीं किया गया था, बल्कि अलसी के तेल और मधुमक्खियों के मोम के मिश्रण का प्रयोग हुआ था। (क्रमशः)

Auth. Distributor
परदे ही परदे गदद्दे ही गदद्दे
J.K. Singhal
S.K. Singhal
Sleepwell
Sleepwell
Singhal Furnishing
(Auth. Sleepwell Gallery)
Deals in : All kinds of S/W Mattress, Cushions, Pillows, Flooring Carpets, Curtains, Sofa's Clothes, Sofa Materials & Blinds.
Near Aggarwal Dharmshala, Nathu Colony, Chawla Colony, Ballabgarh-121004
Ph. : (O) 0129-2244905, J.K. : 9911706903, S.K. 9891305902

www.thearyasamaj.org

कथनी और करणी में अन्तर क्यों?

– जसवन्त राय गुगलानी

महर्षि दयानन्द जी ने भारतवर्ष ही नहीं अपितु विश्व भर में व्याप्त अन्धकार को मिटाने का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने वेदों के विरुद्ध चल रही कुरीतियों को सामूलोछेदन करने के लिये आर्य समाज की स्थापना की तथा हमारे मार्गदर्शन हेतु सत्यार्थ प्रकाश संस्कार विधि, ऋगवेदादि भाष भूमिका जैसे ग्रंथ लिख डाले। अब यह कार्यभार आर्यसमाजों पर है कि वे महर्षि के सपनों को साकार करें। क्या यह सम्भव है? मेरी निजी राय में यह असम्भव प्रतीत होता है। हो सकता है कि पाठकगण मेरी इस धारणा से समहत न हों। परन्तु मैं अपनी राय के समर्थन में निवेदन करना चाहूँगा कि खेतों की रक्षा बाढ़ किया करती है। यदि बाढ़ ही खेतों को नष्ट करने पर उतारू हो जाये तो खेत कैसे सुरक्षित रह सकते हैं। स्वामी जी महाराज द्वारा दिखाये मार्ग व बताये मन्तव्यों का उल्लंघन आर्य समाज के कर्णाधार, आर्यसमाजों के अधिकारी गण ही कर रहे हों, जब वे स्वयं कुरीतियों व कुपरम्पराओं में लिप्त हो रहे हों तो आप पाठकगण स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि आर्य समाज का भविष्य क्या होगा? इस लेख के माध्यम से मैंने आर्यसमाज के साधारण सदस्य ही नहीं अपितु पदाधिकारियों को अपने मन्तव्यों के विपरीत आचरण करने के कुछ उदाहरण दिये हैं।

स्वामी जी महाराज ने मूर्तिपूजा का घोर खण्डन किया है। मैं कुछ आर्यसमाज के अधिकारियों से परिचित हूँ जो मञ्चों पर तो मूर्ति पूजा का खण्डन करते हैं परन्तु स्वयं शिवलिंग पर जल चढ़ाने जाते हैं। यह कार्य प्रातःकाल के अन्धकार में किया जाता है। एक आर्य समाज के अधिकारी ने घर में ही मूर्ति रखी हुई है तथा प्रतिदिन उसकी पूजा करते हैं। ईश्वर को निराकार मानने वाला व्यक्ति ईश्वर की प्रतिमा क्योंकर सम्भव समझने लगा। एक अन्य सज्जन ब्रह्म यज्ञ (संध्या) नित्यप्रति करते हैं परन्तु संध्या उपरात्न हनुमान चालीसा पढ़ते हैं। जब उनको इस पर चेताया गया तो उत्तर में उन्होंने कहा अपने पूर्वजों के गुणगान में आर्यसमाज को क्या आपत्ति हो सकती है। जहाँ तक पूर्वजों के गुणगान की बात है, मुझे उस पर आपत्ति नहीं है। महावीर हनुमान अत्यन्त बलशाली थे, वे गुणों के सागर भी थे। परन्तु मेरी समझ में यह नहीं आता कि आर्यसमाज के मन्तव्यों को माननेवाला भूत प्रेत से कब से डरने लगा तथा सहायतार्थ हनुमान जी को पुकारने लगा। क्या ही अच्छा होता यदि ऐसे सज्जन, हनुमान जी के स्वामी सेवा के गुणों को अपने जीवन में अपनाते हुए जहाँ कहीं पर भी सेवा रत हैं, लगन से सेवा कार्य को निभाते। दुष्टों के दलन में अपने बल का प्रयोग करते।

अब आइये एक और सज्जन से मिलायें। यह सज्जन किसी व्यक्ति के निधन पर श्रद्धाञ्जली देते हुए परमात्मा में उसको स्वर्गवासी करने की प्रार्थना करना नहीं भूलते।

आप लोगों को विवाहोत्सवों के निमन्त्रण पत्र प्राप्त होते होंगे। अधिकांश आर्यसमाजियों के निमन्त्रण पत्रों के आमुख पृष्ठ पर गणेश का चित्र होता है। एक आर्यसमाजी ने यह तर्क दिया कि बाज़ार में कार्ड ही ऐसे मिलते हैं। अव्वल तो मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ, दूसरा यह कि कार्ड पर मुद्रित–

विघ्न हरण मंगल करण गणनायक गजराज।
प्रथम निमन्त्रण आपको पूर्ण कीजै काज।।
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्न कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

आदि तो छपे हुए नहीं होते। विडम्बना तो यह है कि प्रभु के निज नाम 'ओ3म्' का प्रयोग न करके गणेश जिस को हाथी की सूण्ड लगा कर प्रदर्शित किया जाता है हमारे कार्य सिद्ध करने में सक्षम हैं।

एक आर्य समाज के अधिकारी ने पुत्र का विवाह किया, बधाई देने हेतु उनके घर पर जाना हुआ, देखकर अचम्भा हुआ कि प्रवेश पर ही वक्रतुण्ड की मूर्ति लगायी हुई थी। मैं कुछ सज्जनों से परिचित हूँ जो प्रतिष्ठित आर्यसमाजी हैं, प्रतिदिन प्रातःकाल घर पर यज्ञ करते हैं। उनके फैक्ट्री के कार्यालय में वक्रतुण्ड महाकाय विराजमान हैं तथा उन के आगे धूप दीप जलाया जाता है। वही क्यों

www.thearyasamaj.org

अधिकांश आर्यसमाजियों की फैक्ट्री में गणेश जी की मूर्ति फैक्ट्री के प्रवेश द्वार अथवा कार्यालय के अन्दर लगाई मिलेगी।

मेरे एक आर्यसमाजी मित्र ने एक आर्य विद्यालय में स्थापित गणेश की मूर्ति पर घोर आपत्ति की परन्तु उनकी अपनी बैठक में 8-10 फुट का गणेश जी का चित्र लगाया हुआ मिला।

आइये कुछ ऐसे व्यक्तियों के बारे में लिखना चाहूंगा जो मात्र लोकेष पूर्ति हेतु माता के जगरातों में न केवल सम्मिलित होते हैं अपितु मूर्ति के आगे आरती की थाली लेकर आरती करते भी नज़र आते हैं। मुझे एक बहुत पुरानी घटना स्मरण है। मेरे साथ मेरी आर्यसमाज के प्रधान श्री रामचन्द्र आर्य भी थे, आर्यसमाज के एक शीर्ष नेता को अपने कार्यक्रम में व्याख्या के लिये आमन्त्रित करने गये थे। वह नेता उन दिनों सांसद थे, एक अन्य आर्यसमाजी सांसद की शिकायत करते हुए बोले कि हमारी मार्किट में जगराता है और उन्होंने वहां पर यह कर कि "मैं आर्य समाजी हूँ" जगराते में सम्मिलित नहीं हो सकता जब कि मैं (आमन्त्रित किये जाने वाले नेता) जगराते में शामिल हुआ, कारण बताते हुए कि राजनीति में भाग लेने वालों को सब कुछ करना पड़ता है।

मेरे एक अन्य मित्र हैं। आर्य समाज के अधिकारी हैं तथा पैतृक आर्यसमाजी हैं। उनकी गाड़ी में उन के संग यात्रा करने का अवसर प्राप्त हुआ। मार्ग में एक कार दुर्घटना ग्रस्त हुई पड़ी थी। कहने लगे देखिये इस का का नं. अन्त में 13 है। मैंने पूछा आप का यह कहने का अभिप्राय क्या है? तो बोले 13, 113, 1013 या 13 के अंक से विभाजित होने वाली संख्या यानि 26, 39, 117 आदि अपशकुन होता है और इसलिये दुर्घटना होने की सम्भावना अधिक रहती है। मैं सोच रहा था कि इनके अनुसार गिनती में से 13 अथवा 13 से विभाजित होने वाले अंक निकाल देने चाहिये।

एक अन्य आर्य समाज के मन्त्री थे। उन्होंने स्वयं अपनीअ ांखो से स्टोव महाशय को प्रश्नों के उत्तर देते देखा। स्टोव जी यदि हां कहना चाहते तो अपनी एक टांग उठाते थे। महाशय जी जड़ और चेतन का अन्तर ही नहीं समझ पाये। इतना ही नहीं उन्होंने श्री गणेश जी के फोटो को दूध पीते भी देखा। बन्धुओं, प्रकृति का नियम है कि भोजन तो जो भी करेगा वह मल का त्याग भी करेगा। विडम्बना तो यह है कि उन महाशय तथा उन समेत अन्य अनेक लोगों ने जो बुद्धि का प्रयोग ही नहीं करते, ने गणेश जी के चित्रों व मूर्तियों को दूध पीता तो देखा पर मल विसर्जन करते नहीं देखा।

मेरी पूज्या बहिन जी हैं जो दयानन्द की तो दीवानी हैं पर उन के कार्य सिद्ध करते हैं बाला जी महाराज। बात-बात पर कहती हैं मेरे पर बाबा की कृपा है।

आर्य समाज के केन्द्रीय स्तर के अधिकारी अपनी माता जी की अस्थियों का विसर्जन गंगा जी में करने में बड़ा पुण्य मानते हैं।

मेरे एक अन्य मित्र जो आर्यसमाज के अधिकारी हैं तथा अपने वृद्ध जनों के देहान्त पर उन को चरण वन्दना करके उनके चरणों में नारियल तथा राशि चढ़ाते देखा गया।

एक अन्य महाशय जो प्रतिदिन यज्ञ करते थे। अन्य लोगों के घरों पर तो कुरीतियों तथा गलत परम्पराओं का जोर शोर से विरोध करते थे परन्तु उनके अपने भ्राता की मृत्यु पर जब दिवंगत के चित्र पर पुष्प माला पहनाये जाने पर किसी ने आपत्ति की तो उस के उत्तर में उन्होंने तथा उन के अन्य भाई जो एक आर्य समाज के प्रधान थे आपत्ति कर्ता पर रोष प्रकट किया तथा कहा कि यह तो दिवंगत के लिये सम्मान सूचक है। तो क्या पौराणिक भाई राम व कृष्ण के चित्र पर पुष्पमाला सम्मान हेतु नहीं डालते?

मेरे एक अन्य प्रिय मित्र जो आर्य समाज के विभिन्न पदों को सुशोभित कर चुके हैं अपने भजन के माध्यम से उस प्रभु को पुकार कर राम की भान्ति भीलनी के बेर खाने का निमन्त्रण देते हैं, कृष्ण के रूप में विदुर के साग खाने का निमन्त्रण देते हैं और धन्नंजय को जैसे दर्शन दिये, मीरा के कृष्ण आदि के प्रति प्रेम के आधार पर पुकारते हैं। तो क्या अब यह समझा जाये कि आर्यसमाजी भी उस निराकार ईश्वर को साकार रूप में मानने लगे हैं जो बेर व साग खाएंगे।

मुझे सब से बड़ा अचम्भा तो तब हुआ जब आर्यसमाज के एक महान् सन्यासी ने एक विशाल जन सभा को सम्बोधित करते हुए उपदेश दिया कि प्रतिदिन प्रातः धरती माँ को व सूर्य भगवान को प्रणाम किया करें।

www.thearyasamaj.org

मुझे यह बात समझ नहीं आई कि क्या धरती व सूर्य जड़ नहीं हैं। उनके उपदेश का प्रभाव देखने को भी मिला जब मैं आर्य परिवार की एक देवी को सूर्य को नमस्कार करते तथा तुलसी को जल चढ़ाते देखता हूँ।

बहुधा आर्य समाज के अधिकारी गण पुत्र–पुत्री का विवाह करने के समय महर्षि के द्वारा बताये गये मार्ग को न अपना कर लड़के व लड़की के गुण व स्वभाव का मिलान करने की बजाय उनकी जन्म पत्री का मिलान करते हैं। आज भी ज्योतिषियों के चक्कर में पड़ते देखे गये हैं।

एक सज्जन, आर्यसमाज के प्रधान पद के चुनाव के समय हुए निर्णय कि कोई ऐसा व्यक्ति जो मांसाहार करता हो, धूम्रपान करता हो, मद्यपान करता हो, आर्य समाज के किसी पद को ग्रहण न करे, के विपरीत घर में हुक्का पीते पाये गये। इतना ही नहीं बल्कि अपनी पुत्री के विवाह पर मद्यपान किये हुए मिले।

कुछ अधिकारी गण मांस व अण्डे खाने का विरोध तो करते हैं परन्तु पेस्ट्री खाने में कोई आपत्ति उन्हें नहीं होती।

अब आर्य समाज के पुरोहितों के बारे निवेदन करना चाहूंगा। कुछ पुरोहित पौराणिक रीति रिवाज (विवाह आदि संस्कारों में) अपनाने में नहीं झिझकते। पूजा की थाली तैयार की जाती है, जिस में स्वास्तिक का चिह्न अंकित किया जाता है, आशीर्वाद हेतु अक्षत थाली में डलवाए जाते हैं। इतना ही नहीं कुछ पुरोहितगण पौराणिक विधि से सत्यनारायण की कथा आदि भी कराते हैं।

अन्त में बड़े विनम्र शब्दों में निवेदन करना चाहूंगा कि आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य, कार्यकत्ता, अधिकारीगण, पुरोहित जन, आर्यसमाज के मन्तव्यों व मान्यताओं व मर्यादाओं का पालन करें अन्यथा महर्षि के सपने साकार न हो पायेंगे ऐसा मेरा मानना है। पाठक गण इस को कैसा समझते हैं मैं नहीं जानता।

■

Arya Convent School

Near 100 Ft. Road, Sec.-55, Jeevan Nagar, Faridabad

The School : Neat & Clean Campus, Educated and dedicated Promotors, Transport Facility from nearby areas, Permanently recognised and affliated to Haryana Board, Special emphasis on Spoken English, Ultra modern teaching aids, including projectors, Library with all relevant material.

Director
Sanjay Arya
9212307856

Principal
Rajni Arya
9212307852

www.thearyasamaj.org

स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान

– मित्रसेन आर्य, एम.ए.

"जहां–जहां आर्यसमाज का जोर है, वहाँ पर राजद्रोह प्रबल है।" वे शब्द श्री वकेटाईन शिहोल ने इण्डिया अनरेस्ट नामक पुस्तक में लिखे। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाजियों में स्वतन्त्रता की भावना कूट–कूट कर भर दी थी। आपने सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में भारतवर्ष की परतन्त्रता का कितने दुःखमय शब्दों में चित्र खींचा "अभाग्योदय से आर्यों के आलस्य प्रमाद तथा परस्पर के विरोध में अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड स्वतन्त्र और निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ भी है वह विदेशियों से पदाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतन्त्रा हैं। दुर्दिन जब आता है तब देशवासियों को अनेक आपतियां भोगनी पड़ती हैं। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य है वह सर्वप्रिय उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा माता पिता के समान कृपा दया और न्याय के साथ विदेशियों को राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं।" ये भावनायें उनकी उस समय थीं जब कि यहाँ विदेशियों का राज्य था।

आर्य समाज और अंग्रेजी शासक

आर्यसमाज की प्रगति की ओर शंकित दृष्टि से देखते हुए पंजाब के तत्कालीन गवर्नर पर लूईडैन ने कहा था–"जो संस्था आज धार्मिक तथा सामाजिक सुधार का उद्देश्य रखती है। क्या यह सम्भव नहीं है कि वही अपने उचित आदेशों से विमुख होकर एक ऐसी राजनीतिक संस्था में परिवर्तित हो जाये जिसका ध्येय सरकार के प्रति वफादारी से मेल न खाता हो।"

इसी प्रकार के विचार अनेकों व्यक्तियों ने लिखे इसका परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज अंग्रेजों की दृष्टि में खटकने लगा। उन्होंने इसके मार्ग को अविरुद्ध करने के लिये अनेकों प्रयास किये, इस मनोवृत्ति का परिचय सर वेले स्टाइन के निम्न शब्दों से भी हो जायेगा –

"The whole drift of Dayanand's teachings is far less to reform Hinduism than to rouse it into active resistance to the alien influences which threatened, in his opinion, to denationalise it. Hence the outrageously aggrassive tone of his writings wherever he alludes either to Christianity or to Mohamedanism."

आर्यसमाज ने सामूहिक रूप से राजनीति का डंका नहीं बजाया पर इससे असंहमत नहीं हो सकते कि व्यक्तिगत रूप से कोई भी आर्यसमाजी ऐसा नहीं होगा जिसने स्वतन्त्रता संग्राम में किसी न किसी प्रकार की सहायता न पहुंचाई हो। बल्कि उसमें बलिदान होने वाले तथा जेल जाने वाले वीरों में 80 प्रतिशत आर्यसमाजी थे। उनमें से कुछ नेता तो अत्यधिक प्रसिद्ध हुये हैं। पंजाब केसरी ला. लाजपतराय तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम व काम को महात्मा गान्धी आजीवन न भूल सके। वे लिखते हैं–

I can hardly describe any episode in my life since then without referring to my relations with them. For though Shradhanandji, Desabandhu, Hakim Saheb and Lalaji are no more with us today, we have the good luck to have a host of other Veteran Congress Leaders still living and working in our midst.

इनके अतिरिक्त सर्वश्री श्याम जी, कृष्ण वर्मा, भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, राजा महेन्द्र प्रताप, गणेश शंकर विद्यार्थी, घनश्यामसिंह गुप्त, ला. रामनारायण लाल आदि मुख्य वीर हैं। इसकी अनेकों संस्थाओं ने भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। उनमें से दो का ही संक्षिपत वर्णन मैं करूँगा।

गुरुकुल कांगडी

इस आन्दोलन में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी के अध्यापकों और ब्रह्मचारियों ने विशेष उल्लेखनीय कार्य किया जिनके कारण भयंकर विपत्तियां गुरुकुल पर आई किन्तु उन्होंने बिना भय के अपने इस कार्य को आगे बढ़ाया।

अन्य गुरुकुल

गुरुकुल कांगड़ी ही नहीं अपितु आर्यसमाज द्वारा

www.thearyasamaj.org

स्थापित लगभग 400 गुरुकुलों में स्वतन्त्रता की आग भड़की हुई थी। वहाँ के एक ब्रह्मचारी के मन में करने या मरने की भावना भर गई थी। इन्हीं गुरुकुलों में ब्र. सत्यमित्र जैसे शहीद बनाये गए। भारत के स्वातन्त्र्य इतिहास में इनके नाम सदैव के लिए स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गए।

स्वतन्त्रता का मूल

आज जो भारत में स्वतंत्रता का सूर्य उदय हुआ, सारे देश में राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक उन्नति ने उत्तरोत्तर परिवर्तित होते हुये जो रूप ग्रहण किया उसका आरम्भ आर्य समाज द्वारा ही हुआ था। कांग्रेस का तो उस समय जन्म भी न हुआ था। इसीलिए वीर सावरकर ने कहा था 'आर्यसमाज कांग्रेस की जननी है।' इस प्रकार स्वातन्त्र्य वृक्ष के बीज रूप में आर्यसमाज ही था।

आर्य समाज के ग्रन्थों में राजनीति के उच्चतम सिद्धान्तों का, राष्ट्रीयता तथा देश भक्ति का सर्वत्र वर्णन मिलता है। ऐसी कोई बात नहीं जो इनमें न लिखी हो। एक स्थान पर लिखा है कि "क्षत्रियों को युद्ध में एक हाथ से रोटी खाते और जल पीते जाना और दूसरे हाथ से दुश्मन को मारते जाना। अपनी विजय ही आचार, पराजय ही अनाचार है।"

उप संहार

इस प्रकार से हमने संक्षेप में देखा कि आर्य समाज का स्वतन्त्रता आन्दोलन में कितना योग था। इसके सदस्यों ने कितना कार्य किया आज जब राष्ट्र पर विपत्ति छाई हुई है ऐसे समय में तो आर्यसमाज का विशेष उत्तरदायित्व है। अतः मैं महर्षि दयानन्द के शब्दों में समस्त भारतवासियों को कहना चाहता हूँ "जो उन्नति चाहो तो आर्यसमाज के साथ उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए। नहीं तो कुछ भी हाथ न लगेगा।"

■

महर्षि दयानन्द सेवाधाम ट्रस्ट, सैक्टर 7, फरीदाबाद

सर्वे सन्तु निरामयाः

प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र महर्षि दयानन्द सेवा धाम ट्रस्ट (पंजीकृत) आर्य समाज सैक्टर 7ए, फरीदाबाद (हरि.) चिकित्सालय में सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज पंच तत्वों (मिट्टी, पानी, धूप, हवा, आकाश) के माध्यम से किया जाता है। किसी प्रकार की दवाई का प्रयोग नहीं किया जाता है।

आर्य समाज की प्रमुख गतिविधियों में से एक प्राकृतिक चिकित्सा लगभग दस वर्षों से निरन्तर ही समाज के लोगों को निरोगी करती चली आ रही है।

महिला तथा पुरुषों के इलाज की अलग–अलग व्यवस्था है। सक्षम तथा कुशल स्टाफ समाज की सेवा में कार्यरत हैं।

निराश न हों तथा जीर्ण रोगों के इलाज के लिए सम्पर्क करें।

नोट : साढे तीन वर्षीय एन.डी.डी.वाई. डिप्लोमा कोर्स के लिए सम्पर्क करें।

– चिकित्सा अधिकारी डा. विजेन्द्र सिंह (सागर जी), दूरभाष : 9210291284

www.thearyasamaj.org

'गोदी भरे लाल' से साभार

निडर शक्तिसिंह

मानियों को मान का, रहता सदा अभिमान है।
जान जाने से अधिक, वे जानते अपमान हैं।।–अज्ञात

मेवाड़ के राणा उदयसिंह के 24 पुत्र थे, जिनमें शक्तिसिंह दूसरा था। वह बचपन ही से बड़ा निडर और साहसी था। पिता और पुत्र की प्रकृति मिलती नहीं थी, इसी कारण शक्तिसिंह महाराज की आँखों में काँटे की तरह खटकने लगा। एक दिन वह समय भी आ गया, जब राणा अपने पुत्र शक्तिसिंह को मारने के लिए उद्यत हो गए। छोटी अवस्था में ही एक दिन राजकुमार शक्तिसिंह अपने पिता के पास बैठा खिलवाड़ कर रहा था। इतने में एक हथियार बनानेवाला एक नया खंजर बनाकर राणा के पास लाया और खंजर की परीक्षा एक पतले सूती कपड़े पर करने लगा।

बालक शक्तिसिंह ने कहा, "पिता जी! यह खंजर तो हड्डी-मांस काटने के लिए बना है।" यह कह वह झट से खंजर की परीक्षा अपनी उँगली पर करने लगा। तत्क्षण ही रक्त की धारा बह निकली और सारी गद्दी लोहू से रंग गई; परन्तु शक्तिसिंह हँसता रहा।

बालक शक्तिसिंह का यह साहस देख सभा के सब लोग भौचक्के रह गए, परन्तु राणा ने अपनी भीरुता अथवा अन्य किसी कारण से आज्ञा दी–"शक्तिसिंह का सिर तुरंत ही तलवार से उड़ा दिया जाय!"

बालक शक्तिसिंह को शीघ्र ही वध-स्थान में ले-जाया गया। साहसी बालक की यह दुर्दशा देख सालुम्बरा-सरदार ने महाराज की सेवा में उपस्थित हो विनीत भाव से प्रार्थना की, "महाराज! आपने इस दीन दास से सन्तुष्ट होके कई बार वरदान देने की इच्छा प्रकट की, परन्तु सुयोग न मिलने के कारण दास आज तक कुछ प्रार्थना न कर सका। कृपानाथ! इस उपयुक्त समय पर सेवक की कामना पूरी कीजिए।"

राणा उदयसिंह ने सरदार जी की इच्छा पूर्ण करने का वचन दिया। सरदार साहब ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "अन्नदाता! मैं न धन चाहता हूँ, न जागीर, और न ऊँचा पद। मेरी तो केवल यही प्रार्थना है कि आप राजकुमार की मृत्यु-दंड की आज्ञा लौटा लें।" अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार राणा उदयसिंह को आज्ञा लौटानी पड़ी।

सालुम्बरा-सरदार ने शक्तिसिंह को अपना धर्म-पुत्र बना लिया, परन्तु बुढ़ापे में कई संतान होने के कारण शक्तिसिंह को जागीर देने में आगा-पीछा सोचने लगा। उन्हीं दिनों राणा प्रतापसिंह का एक दूत सालुम्बरा-सरदार की सेवा में यह सूचना लेकर उपस्थित हुआ, "राणा प्रतापसिंह ने अपने भाई शक्तिसिंह को स्मरण किया है।"

अपने धर्म-पिता से अनुमति लेकर शक्तिसिंह बड़े आनंद से अपने बड़े भाई के पास रहने लगा, पर दुर्भाग्य से उनका बन्धुत्व अधिक समय तक स्थिर न रह सका। एक दिन शिकार के समय निशाने के विषय में दोनों भाइयों में झगड़ा हो गया। प्रताप ने आँखें लाल करके बर्छा दिखाकर कहा, "देखते क्या हो? आओ देखें, किसका निशाना ठीक बैठता है।"

इतना सुनते ही शक्तिसिंह भी बर्छा लेकर आगे बढ़ा। वीर-प्रथा के अनुसार शक्तिसिंह ने बड़े भाई के चरण छुए और प्रतापसिंह ने भी छोटे भाई को आशीर्वाद दिया। फिर एक-दूसरे पर आक्रमण करने को उद्यत हो गए। दोनों के क्रोध से काँपकर साथी लोग एक ओर खड़े हो गए, परन्तु सिसोदिया-कुल के इस प्रकार नष्ट होने के लक्षण देख कुल-पुरोहित दोनों के बीच में जाकर खड़ा हो गया और बोला, "महाराज! अलग हो जाइए। इस प्रकार परस्पर के युद्ध से सिसोदिया-कुल को नष्ट न कीजिए।"

परन्तु जब समझाने-बुझाने पर भी पुरोहित का उद्योग सफल न हुआ तो उसने अपने हृदय में कटार मार ली और दोनों के बीच गिरकर मर गया।

ब्रह्म-हत्या का पातक और कलंक लगने पर दोनों राजकुमारों की आँखें खुलीं। उन्होंने बर्छे चलाना बंद कर दिया। प्रतापसिंह ने शक्तिसिंह को मेवाड़ राज्य छोड़कर चले जाने की आज्ञा दी। शक्तिसिंह प्रणाम करके चल दिया, किन्तु साथ ही बदला लेने की सूचना देता गया। मेवाड़ से जाकर वह अकबर के पक्ष में जा मिला।

www.thearyasamaj.org

इधर प्रतापसिंह ने हितकारी कुल-पुरोहित का अंतिम-संस्कार किया और उसके पुत्र के लिए एक जागीर लिख दी। उस जागीर को पुरोहित के वंशज आज तक भोगते हैं। जिस स्थान पर कुल-पुरोहित ने अपनी छाती में कटार मारकर अनुपम आत्मोत्सर्ग का परिचय दिया था, वहाँ उसका एक स्मारक-स्तम्भ बनवा दिया। यह स्तम्भ अब तक विद्यमान है।

जिस दिन महाराणा प्रताप हल्दी घाटी की लड़ाई से ज्यों-त्यों प्राण बचा भाग निकले और मुगल सैनिकों ने उनका पीछा किया, उस दिन शक्तिसिंह ने मुगल सैनिकों को मारके अपने बड़े भाई के प्राणों की रक्षा की और सच्चे भ्रातृ-स्नेह तथा अद्‌भुत उदारता और वीरता का परिचय दिया। दोनों भाइयों का इस बार का स्नेह-बन्धन फिर जन्मभर न टूटा। ■

आर्य नेता श्री कन्हैयालाल आर्य जी को पितृ शोक

अपने जीवन के 94 वसन्त देखने के पश्चात आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के वरिष्ठ उपप्रधान एवं आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव के प्रधान के पिता श्री रामचन्द्र आर्य लम्बी बीमारी के पश्चात स्वर्ग सिधार गए। श्री रामचन्द्र आर्य एक निष्ठावान समाजसेवी एवं स्पष्ट वक्ता थे। उनकी करनी और कथनीसदा एक जैसी थी। गुड़गांव व गुड़गांव से बाहर कोई ऐसी संस्था नहीं जिसे वह अपनी पवित्र कमाई से सहयोग न करते हों। किसी भी समाचार पत्र में कोई भी सहायता की अपील आने पर वह द्रवित हो जाते थे आर अपनी पवित्र कमाई में से उसे सहयोग अवश्य किया करते थे। वह अपने पीछे एक मात्र पुत्र श्री कन्हैया लाल आर्य एवं बड़ी पुत्री श्रीमती ईश्वर देवी एवं छोटी पुत्री श्रीमती पुष्पा देवी एवं पत्नी श्रीमती जमना देवी को छोड़ कर गए हैं। अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पाँच वैदिक विद्वानों द्वारा किया गया।

श्रद्धांजलि सभा का प्रारम्भ यज्ञ के ब्रह्मा श्री सत्यदेव शास्त्री जी के शान्ति यज्ञ द्वारा हुआ। श्री नरेन्द्र आर्य वशिष्ठ के प्रभु भक्ति के भजन हुए। श्री अशोक शर्मा वरिष्ठ साहित्यकार ने श्रद्धांजलि सभा का संचालन किया। श्रद्धांजलि सभा में आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी, सन्त पधारे हुए थे। उनमें से प्रमुख रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य बलदेव जी महाराज, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य विजय पाल जी, निष्ठावान सन्त आर्य तपस्वी जी, आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फरुखनगर के संचालक स्वामी धर्ममुनि जी महाराज, कर्म योगी आचार्य सत्यवीर जी शास्त्री, योगाचार्य डॉ. ओमप्रकाश पाली वाले एवं पौराणिक जगत के महामण्डलेश्वर स्वामी धर्मदेव जी महाराज ने अपनी श्रद्धांजलि दी।

इसके अतिरिक्त आर्य जगत के अन्य सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी अध्यक्ष सत्यधर्म प्रकाशन, हरीश स्वामी जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री जिले सिंह, उपमन्त्री श्री राजवीर जी, आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा देहली के महामन्त्री श्री राजीव आर्य, आर्य वीर दल हरियाणा के महामन्त्री वेद प्रकाश आर्य, सार्वदेशिक आर्यवीर दल के उपमन्त्री श्री चन्द्र देव आर्य, गोशाला संघ हरियाणा के सभी अधिकारी, आचार्य अरविन्द शास्त्री, श्री शिवदत्त शास्त्री, श्री रत्नेश शास्त्री, श्री मेहरचन्द सेतिया, डॉ. सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य ;षिपाल जी, गुरुकुल भादस के आचार्य राम निवास जी, गौशाला पिनगवां के संचालक श्री वेद प्रकाश परमार्थी, फरीदाबाद आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री बलबीर मलिक, आर्य वेद प्रचार मंडल, मेवात तथा गुड़गांव की सभी 20 आर्य समाजों के सदस्य पदाधिकारी सहित अनेक विद्वान व कार्यकर्ता पधारे हुए थे।

पगड़ी रस्म कराई गई तथा शान्ति पाठ के साथ कार्यवाही सम्पन्न हुई। ■

www.thearyasamaj.org

'नैतिक शिक्षा' से साभार

शिष्टाचार : जीवन की सुगन्धि

ले. आचार्य प्रेम भिक्षु

एक बार अमेरिका के एक राष्ट्रपति अपनी स्पेशल ट्रेन से यात्रा कर रहे थे। मार्ग में कुछ देर के लिये ट्रेन ठहरी। एक बुढ़िया उस ट्रेन को साधारण ट्रेन समझकर उसमें सवार हुई और देवयोग से राष्ट्रपति के डिब्बे में घुस कर उन्हीं के पास जा बैठी। राष्ट्रपति ने कोई आपत्ति नहीं की। ट्रेन के चलने पर राष्ट्रपति ने सिगरेट सुलगाई। बुढ़िया सिगरेट के धुँआ को बर्दास्त न कर सकी और बोली-'क्या तुम शिष्टाचार नहीं जानते?' यह सुनते ही राष्ट्रपति ने अपनी सिगरेट डिब्बे के बाहर फेंक दी। जब ट्रेन निर्दिष्ट स्टेशन पर पहुँची और बुढ़िया ने पुलिस, मिलटरी, उच्च राज्य कर्मचारी तथा सर्व साधारण जनता की अपार भीड़ देखी तो उसे अपनी भूल का पता लगा। बुढ़िया के होश-हवास उड़ गए। वह मारे भय के काँपने लगी। उसने राष्ट्रपति के पास जाकर अपने दुर्व्यवहार के लिये क्षमा याचना की। राष्ट्रपति ने बड़ी नम्रता से कहा-माँ! घबड़ाओ नहीं, तुमने मुझे शिष्टाचार का बहुत अच्छा पाठ पढ़ाया है।'।

★★★

फ्रांस का राजा हेनरी एक दिन पेरिस नगर में अपने अंग-रक्षकों तथा उच्चाधिकारियों के साथ कहीं जा रहा था। मार्ग में एक भिखारी ने अपनी टोपी सिर से उतार कर, मस्तक झुकाकर अभिवादन किया। हेनरी ने भी टोपी उतारी और सिर झुकाकर भिखारी को अभिवादन किया। यह देख एक उच्चाधिकारी ने कहा-श्रीमान्! एक भिखारी को आप इस प्रकार अभिवादन करें, क्या यह उचित है?' हेनरी ने सरलता से उत्तर दिया 'फ्रांस का राजा एक भिखारी जितना भी सभ्य नहीं, यह मैं सिद्ध करना नहीं चाहता।'

प्यारे बच्चो! शिष्टाचार जीवन की एक सुगन्धि होती है जिससे व्यक्ति के चारों ओर सुवासित वातावरण बना रहता है।

स्वाभिमानी बालक तिलक

एक बालक था। यह बालक बड़ा ही बुद्धिमान था। स्कूल में वह बड़े ध्यान से पढ़ता था। उस बालक को मूंगफली बहुत ही अच्छी लगती थी। बालक के मास्टर साहब उसकी इस आदत को अच्छी तरह जानते थे।

एक दिन जब वह स्कूल में पढ़ने गया, तो उस समय कक्षा में मास्टर साहब नहीं थे। कुछ देर बाद जब आये तब उन्होंने देखा कि कक्षा में मूँगफली के छिलके बिखरे पड़े हैं।

मूंगफली के उन बिखरे हुए छिलकों को देखते ही मास्टर साहब को क्रोध चढ़ गया। उन्होंने सोचा, हो न हो उसी बालक ने ही ये मूंगफली खाई है। उन्होंने बालक को कहा-'तुमने मूंगफली खाकर छिलके यहाँ क्यों बिखेरे हैं?'

बालक ने सहज भाव से उत्तर दिया, "मास्टर साहब, यह मूंगफली मैंने नहीं खाई है।"

बालक ने मूंगफली न खाने की अपनी बात बार-बार दुहराई पर मास्टर जी ने उसकी बात का विश्वास नहीं किया। इस अपमान से दुःखी हो, उसने उस स्कूल में पढ़ना ही छोड़ दिया।

मास्टर साहब जब उसे बुलाने के लिए घर गये, तब उसने कहा-"मास्टर साहब, जिस स्कूल में सचाई के लिए आदर नहीं, उस स्कूल में मैं नहीं पढ़ सकता।"

यह बालक थे, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक। सचमुच तिलक बड़े स्व-भिमानी और निडर थे। 'स्वराज्य हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है' कहकर उन्होंने ही ऋषि दयानन्द की भावना को स्वर दिये।

www.thearyasamaj.org

आर्यजगत् की पत्रिकाएं और सृष्टिसंवतादि

– महात्मा ओममुनि, वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक (हरियाणा)

यह सर्वविदित सत्य है कि आर्यजगत् में विद्वानों की कोई कमी नहीं है, किन्तु आर्यजनों का दुर्भाग्य यह है कि अब आर्यविद्वत्जनों ने ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त के निम्न मन्त्र में दिये गये परमपिता परमात्मा के उपदेश को व्यवहारिक रूप से बिल्कुल उपेक्षित सा कर दिया है।

सं गच्छध्वं सं वद्ध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।। ऋ. 10.191.2

भावार्थ – परमपिता परमात्मा मनुष्यों को उपदेश करते हैं कि हे सुख और ऐश्वर्य के अभिलाषी मनुष्यों! तुम सब परस्पर मिलकर चलो, एक दूसरे के साथ शिष्टता एवं शालीनता का व्यवहार करो। तुम लोग विरुद्धवाद को छोड़कर एक-दूसरे के साथ प्रेम, सौहार्द तथा शालीनता से बातचीत करो। तुम्हारे मन मिलकर सहयोग से यथार्थ ज्ञान प्राप्त करें जैसे तुमसे पहले के कर्त्तव्यनिष्ठ ज्ञानीजन मिलकर परस्पर के सहयोग से विविध प्रकार का ज्ञान प्राप्त करते हुए अपने-अपने कर्त्तव्यकर्म को, प्राप्तव्य अभ्युदय और निःश्रेयस, इहलौकिक और पारलौकिक ऐश्वर्यों को प्राप्त करते आये हैं, वैसे ही तुम भी प्राप्त करो। इसी प्रकार साकारात्मक विचार अन्य शेष दो मन्त्रों के भी हैं।

प्रारम्भ में आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संगो के अन्त में इन मन्त्रों के बड़े प्रेमभाव से पाठ करने की परिपाटी थी। इन मन्त्रों में सभी आर्यों अर्थात् सभी अच्छे मानवों को पारस्परिक भेदभाव भुलाकर संगठित होकर एक दूसरे के सहायक बनकर कार्य करने की प्रेरणा दी गई है। किन्तु दुर्भाग्य है आर्यजगत् और इस देश का कि जिन विद्वानों को वैदिक मन्त्रों में देव की संज्ञा दी गई है, वे अपने-अपने अहं एवं स्वार्थ सिद्धि के लिए पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से एक दूसरे पर कीचड़ उछालने अथवा अपने-आपको अन्यों से बड़ा एवं योग्य विद्वान् सिद्ध करने में ही अपनी ऊर्जा नष्ट कर रहे हैं। कभी सत्यार्थप्रकाश पर वाद-विवाद तो कभी किसी अन्य विषय पर मतभेद प्रकट हो रहे हैं। इससे व्यर्थ में आर्यजगत् की प्रतिष्ठा के साथ-साथ साकारात्मक ऊर्जा का भी ह्रास हो रहा है। यदि विद्वानों की इस ऊर्जा का उपयोग ऋषिवर द्वारा प्रतिपादित आर्यसमाज के सिद्धांतों और वेदों के प्रचार-प्रसार में हो तो देश, समाज और मानवता का कल्याण हो सकता है। यहाँ अधिक लम्बी-चौड़ी भूमिका न बांधता हुआ मैं आर्य जगत् में प्रकाशित होने वाली कुछ पत्र-पत्रिकाओं के मुख्य पृष्ठ पर अंकित दयानन्दाब्द सृष्टि संवत् एवं वेदोत्पत्ति जैसे साधारण से विषय पर आर्यजगत् के सम्माननीय विद्वानों का ध्यान आकृषित करना चाहता हूँ। बड़े भारी दुःखित मन के साथ मुझे ये सब लिखने पर विवश होना पड़ रहा है कि आर्यजगत् में प्रकाशित होने वाली अनेक साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक पत्र-पत्रिकाओं का जब अवलोकन करता हूँ और उनके मुख्य पृष्ठ पर अंकित दयानन्दाब्द सृष्टि संवत् एवं वेदोत्पत्ति आदि में कितनी विभिन्नता है। जब एक इस सामान्य से विषय पर आर्यविद्वान् एक मत नहीं है, तब गम्भीर व जटिल विषयों पर क्या होगा। मैं गत कई वर्षों से इस विषय पर बार-बार लेख कई पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन हेतु भेजता रहा हूँ, किन्तु डाक के वही तीन पात, सभी अपनी-अपनी मस्ती में उसी ढर्रे पर मस्त हाथी की तरह चलते जा रहे हैं और मेरे जैसे साधारण व्यक्ति की बात पर कोई ध्यान देना उचित ही नहीं समझता है। शायद भाव यही रहता होगा कि हम इतने बड़े विद्वान् गलत हो ही नहीं सकते या फिर अहम् भावना के कारण अपनी गलती कैसे स्वीकार करें और दूसरे का सही क्यों माने। क्या यह सब पौराणिकों से भी अधिक बड़ी रूढ़िवादिता नहीं है। गणित के आंकड़ों के साथ मनमानी कोई भी नहीं कर सकता, वहाँ तो दो जमा दो चार ही होंगे और दो में से दो घटायेंगे तो शून्य ही बचेगा। आगामी तालिका में गत मास मई और जून 2013 में प्रकाशित हो चुकी आर्य जगत् की कुछ प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के मुख्य पृष्ठ परअ ंकित दयानन्दाब्द, सृष्टि संवत् मानव व वेदोत्पत्ति संवत् आदि के आंगड़ों का विवरण प्रस्तुत है, जिनके अवलोकन

www.thearyasamaj.org

से यह स्पष्ट हो जायेगा कि आर्य विद्वानों में "सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मानांसि जानताम्" की भावना कितनी है–

क्र.सं.	पत्रिका	दयान्दाब्द	सृष्टि	संवत्सृष्टि व वेदोत्पत्ति संवत्
1.	आर्यजगत् दिल्ली	190	1,96,08,53,113	–
2.	वैदिक सार्वदेशिक दिल्ली	190	1,96,08,53,114	–
3.	आर्य सन्देश दिल्ली	189	1,96,08,53,114	–
4.	ओ3म् सुप्रभा दिल्ली	190	1,96,08,53,114	–
5.	परोपकारी अजमेर	189	1,96,08,53,114	–
6.	आर्य संसार कोलकाता	189	1,96,08,53,114	–
7.	आर्य जीवन हैदराबाद	189	1,96,08,53,114	–
8.	शान्तिधर्मी जीन्द	190	1,96,08,53,114	–
9.	आर्य प्रतिनिधि सभा, रोहतक	190	1,96,08,53,114	–
10.	आर्य वीर विजय फरीदाबाद	186	1,96,08,53,111	–
11.	नूतन निष्काम पत्रिका, मुम्बई	190	1,96,08,53,114	–
12.	वेदवाणी, रेवली (सोनीपत)	189	–	1,97,29,49,114

कुछ पत्रिकाओं में ये आंकड़े प्रकाशित ही नहीं होते हैं। अतः वे तो इस धर्म संकट से बचे हुए हैं। अब निम्न तालिका में सृष्टिसंवत् आदि की गणना के आंकड़े प्रस्तुत कर रहे हैं–

1. 43,20,000 वर्षों की एक चतुर्युगी तथा 1000 चतुर्युगियों की एक सृष्टि और इतने ही काल की प्रलय।
2. 71 चतुर्युगियों का एक मन्वन्तर – 43,20,000 x 71 = 30,67,20,000 और 14 मन्वन्तर की एक सृष्टि।

1.	सृष्टि के प्रारम्भ में सन्धिक ाल	–	1,20,96,000 वर्ष
2.	6 मन्वन्तरों का काल	–	1,84,03,20,000 वर्ष
3.	27वें मन्वन्तर की 27वीं चतुर्युगी	–	11,66,40,000 वर्ष
4.	28वीं चतुर्युगी के तीन युग	–	33,88,000 वर्ष
5.	कलियुग के गत वर्ष	–	5,114 वर्ष
6.	कुल योग	–	1,97,29,49,114 वर्ष

और अब दिनांक 20.02.2013 से 1,97,29,49,115वां वर्ष सृष्टि संवत् का प्रारम्भ हो चुका है। तत्पश्चात् मानव एवं वेदोत्पत्ति संवत् का 1,96,08,53,115वां वर्ष दिनांक 12.03.2013 को चैत्रमास शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को प्रारम्भ हुआ था। इस सम्बन्ध में काल गणना का एक विस्तृत लेख भी आपको भेजा जा रहा है। कलियुग की गणना में एक वर्ष की त्रुटि के कारण ही काल गणना 1,96,08,53,115 के स्थान पर 1,96,08,53,114 और 1,97,29,49,115 के स्थान पर 1,97,29,49,114 लिखी जा रही है। कृपया विस्तृत विवरण के लिए काल गणना नामक लेख का अवलोकन करें।

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस के विषय में गलत धारणायें बनी हुई हैं और इसी लिए उनका जन्मदिन गलत तिथियों में मनाया जाता है। इसका विस्तृत विवरण अन्य लेख में प्रस्तुत किया जापयेगा। अन्त में इसी विनय के साथ कि परमपिता परमात्मा हम सबको सद्बुद्धि दे ताकि सब आर्यजन "सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्" के वैदिक सन्देश को हृदयंगम् करते हुए मिलकर चलें और वैदिकधर्म का प्रचार–प्रसार करें।

इसी मंगलमय शुभ भावना और कामना के साथ। इत्योम् शम्।

www.thearyasamaj.org

निन्दा मत करो

- स्वामी विवेकानंद जी परिव्राजक

संसार में अनेक शुभ कर्म हैं। जैसे-यज्ञ करना, सेवा करना, रक्षा करना, दान देना, सत्य बोलना आदि। इसी प्रकार से बहुत से अशुभ कर्म भी हैं। जैसे-चोरी करना, धूम्रपान करना, झगड़े करना, कठोर बोलना, झूठ बोलना, निन्दा करना आदि।

शुभ कर्मों का फल सुख है और अशुभ कर्मों का फल दुःख है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति सुख चाहता है और कोई भी व्यक्ति दुःख को नहीं चाहता। इसलिए सब मनुष्यों को शुभ कर्मों का आचरण करना चाहिए तथा अशुभ कर्मों से बचना चाहिए।

इन अशुभ कर्मों में एक कर्म है-"निन्दा करना।" यह बहुत ही दुःखदायक और उत्तम व्यवहारों का नाश्क कर्म है।

"निन्दा" शब्द के दो अर्थ है। पहला-दोष न होते हुए भी किसी व्यक्ति पर दोष लगाना। जैसे- मोहन क्रोध नहीं करता। फिर भी मोहन को कहना, कि तुम बड़े क्रोधी हो। यह झूठा आरोप 'निन्दा" है।

दूसरा-किसी व्यक्ति का दोष होने पर उसे न कहना और किसी दूसरे व्यक्ति को कहना। जैसे - राजेश क्रोध करता है। प्रदीप ने राजेश का यह दोष (क्रोध करना) राजेश को नहीं बताया-"कि आप क्रोध करते हैं। इससे अन्यों को कष्ट होता है। कृपया इस दोष को दूर करने का प्रयत्न करें।" बल्कि प्रदीप ने राजेश का दोष दिनेश को बताया- "कि राजेश बड़ा क्रोधी है। वह सबको दुःख देता रहता है।" इसका नाम भी निन्दा है।

हमें इन दोनों प्रकार की निन्दा से बचना चाहिए। पहले प्रकार की निन्दा तो सीधा-सीधा मिथ्याभाषण है, जो कि अच्दा नहीं है। दूसरे प्रकार की निन्दा यद्यपि सत्यभाषण तो है। परन्तु इसका उद्देश्य क्या है, यह विचारक रने की बात है। इसके दो उद्देश्य हो सकते हैं-(क) राजेश का दोष सबको बताकर समाज में राजेश की प्रतिष्ठा नष्ट करना। (ख) राजेश के दोष का सुधार करना और राजेश के दोष से होने वाले दुःख से अन्यों को बचाना।

इनमें से पहला उद्देश्य अच्छा नहीं है। क्योंकि कोई हमारा दोष भी समाज में बताकर हमारी प्रतिष्ठा नष्ट करेगा, तो हमें भी अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए प्रथम उद्देश्य से ऐसा करना अनुचित है। यद्यपि दूसरा उद्देश्य तो ठीक है, परन्तु उसकी विधि ठीक नहीं है। यदि हम राजेश के दोष का सुधार करना चाहते हैं और राजेश के दोष से होने वाले दुःख से अन्यों को बचाना चाहते हैं, तो उसकी उचित विधि यह है कि-हम राजेश का दोष (क्रोध करना) राजेश को ही बतायें। जैसे महेश ने भी राजेश का दोष देखा। उसने राजेश का दोष प्रेमपूर्वक उसके हित के लिए, मीठी भाषा में राजेश को ही बताया, अन्य किसी को नहीं। इससे राजेश का क्रोध भी दूर हो गया और अन्यों को भी दुःख नहीं हुआ।

अब विचारने की बात यह है कि प्रदीप ने राजेश का दोष राजेश को ही क्यों नहीं बताया? इसका कारण प्रदीप की अविद्या है। प्रदीप ऐसा सोचता है-'यदि मैं राजेश के दोष को सीधा बताऊँगा, तो वह मुझसे नाराज हो जायेगा।' परन्तु यहाँ प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि प्रदीप द्वारा बताया हुआ राजेश का दोष अनेक व्यक्तियों के कानों से होता हुआ, क्या राजेश के कानों में नहीं पहुँचेगा? यदि राजेश का दोष अनेक व्यक्तियों के कानों में से होता हुआ, राजेश के कानों तक नहीं पहुँचा, तो उसके दोष का सुधार न हो पाने से, प्रदीप द्वारा राजेश का दोष कहना व्यर्थ हुआ।

यदि वह दोष अनेक व्यक्तियों के कानों में से होता हुआ, राजेश के कानों तक पहुँच गया। तब राजेश क्या यह पता नहीं लगायेगा, कि मेरा यह दोष आपको किसने बतलाया? ढूँढ़ते-ढूँढ़ते अंत में जब पता चलेगा कि राजेश का दोष प्रदीप ने समाज में फैलाया। तब क्या प्रदीप से राजेश नाराज नहीं होगा। तब तो और भी अधिक नाराज होगा। यदि प्रदीप सीधा राजेश को उसका दोष बताता, तब कम नाराज होता। अर्थात् नाराज तो राजेश दोनों पक्षों में होगा, चाहे प्रदीप उसका दोष राजेश को सीधा बताए, चाहे अनेक व्यक्तियों के माध्यम से और यह भी हो सकता है कि यदि राजेश के पूर्व संस्कार अच्छे हुए, तो राजेश नाराज न भी हो।

कृपया आत्म निरीक्षण करें-"कहीं आप प्रदीप तो नहीं है?" यदि हों, तो प्रदीप से महेश बनने का प्रयत्न करें।

■

www.thearyasamaj.org

नींद त्यागो

– रविदत्त मेधार्थी

उठो जवानों काम करो यही समय अनुकूल।
राष्ट्र पथ पर आओ युवको! मत जाओ प्रतिकूल।
समय यही है काम करो दुनिया में कुछ नाम करो।
उठो जवानों कदम बढ़ाओं अब न तुम आराम करो।
चलो बढ़ाये जीवन रथ को मत इसको विश्राम दो।
मिले न जब तक लक्ष्य तुम्हारा तब तक न आराम लो।
यह संसार समरांगण है शांति से न काम लो।
वीर बाँकुरो कूद पड़ो तुम न कायरता का नाम लो।
बलशाली बलवान बनो अग्नि या तूफान बनो–
उठो जवानों कदम बढ़ाओ तुम मर्दों के प्राण बनो।
रहो निडर बनकर जग में डर कर काम नहीं चलना,
सीधा पन छोड़ों वीरो टेढ़ा पड़ेगा अब बनना।
बहुत था हमने समझाया पर शत्रु नहीं समझता है,
युद्ध रोके से नहीं रुकता आज यह पड़ेगा करना।
बनो युद्ध प्रिय वीरो आओ अरिदल के घर में घुस जाओ,
समय यह अनुकूल है प्यारो साहस कर के कदम बढ़ाओ।
छोड़ो रे आलस्य जवानों सैनिक हर नौजवान बनो।
कोई वीर प्रताप शिवा कोई गोबिन्द की सन्तान बनो।
वीर सुभाष बनो कोई कोई दयानन्द की शान बनो,
युद्ध छिड़े शत्रुदल से सब गाँधी के आहवान बनो।
नव उत्साह लिए तन में विजय भावना लिए मन में,
देश भक्ति का राग सुना दो गली–गली और घर–घर में।
समझौता नहीं होगा, उठो देश के अंगारो।
कह दो दूर भागो सीमा से और! खूनी हत्यारो।
माता की लाज लुटी देखो बाहर निकलो रे प्यारो।
भारत न अब गुलाम होगा दूर भागो रे हत्यारो।

–साभार

■

फलित ज्योतिष

- हमारे जीवन में जो-जो घटनाएं घ्टती जा रही हैं, जो पहले से निश्चित नहीं है।
- ज्योतिषी को अपना भविष्य ही पता नहीं है। वह आपका भविष्य क्या बताएगा।
- प्रत्येक व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। जब वह स्वतंत्र है तो पहले से कुछ लिखा या निश्चित नहीं है। जब पहले से कुछ भी तय नहीं है तो सिद्ध हुआ कि ''भविष्य कथन'' झूठा है।
- ऐ! हाथ की लकीरों में किस्मत देखने वालो, किस्मत तो उनकी भी होती है जिनके हाथ नहीं होते।
- आपके परिश्रम, आपकी ईमानदारी और आपके संस्कारों से आपका भविष्य बनता है।
- व्यक्ति की आयु निश्चित नहीं है। आयु बढ़ाने वाले कर्म करेंगे, तो आयु बेढ़गी। बुरे कर्म करोगे तो आयु घटेगी।
- शुभ-अशुभ कर्मों का फल इस जन्म में भी मिलता है। ऐसा नहीं है कि सारा अगले जन्म में ही मिलता है।
- भूत-प्रेत कुछ नहीं होता, इनके चक्कर में नहीं आना।
- जीवात्मा कुछ भी विचारे, उसकी ए टू जेड पूरी लिस्ट भगवान के पास है। लेकिन कौन जीवात्मा, कब क्या सोचेगा, क्या करेगा, यह पहले से निर्धारित नहीं है। इसलिए ईश्वर को यह पहले से पता नहीं।

www.thearyasamaj.org

कविता

"'कुछ और''

ले. शाम लाल कौशल

कहते कुछ और हैं
करते हैं कुछ और।
सुनकर बात औरों की
करो ज़रा कुछ गौर।

भगवे चोले ने श्रद्धा को
दिया ऐसा भरमा।
ऐसा ठगा लोगों को
कि न लगने दी हवा।

चमकता सोना देखकर
मैं तो रह गया दंग।
माथा मेरा ठनका तब
जब उतरा उसका रंग।

अपना बनके लोग यहां
करते स्वार्थ का काम।
गंगा जब पार की
तो क्या नौका का काम।

बुरे वक्त में कहते
हैं गधे को भी बाप।
समय हो अनुकूल तो
बाप भी लगे संताप।

झूठ बोल, पाप कर
मर मर जीते लोग।
रात में काले कर्म
सुबह उठ करें योग।

जहां भी लगे दोगलापन
कर दो भांडाफोड़।
क्या हर्ज है कहने में
साधु को साधु, चोर को चोर।

■

'डरो वह बड़ा जबरदस्त है' से साभार

एक स्त्री, उसका पति और फकीर

– महात्मा प्रभु आश्रित

प्रातःकाल का समय है। एक भिखारी भूखे पेट क्षुधा निवृति के लिये चल पड़ता है। आते ही महल देखा, उस पर एक स्त्री दातन कर रही थी। भिखारी ने अलख जगाई 'माई भूखा हूं, कुछ टुकड़ा रोटी का, बासी पड़ा हो तो दे दो'।

माई–अरे मूर्ख! प्रातःकाल ही तुझे भूख लग गई? संसार अभी बिस्तर से उठ रहा है। प्रातः ही मनहूस ने आकर मुँह दिखाया।

भिखारी–माई, कोई जूठा मूठा टुकड़ा ही दे दे।

माई ने कहा–'ले' भिखारी ने हाथ किया और अभिमानिनी माई ने थूक मार दी। भिखारी ने कहा, 'माई अच्छा काम नहीं किया, भला हो, यह तेरी ही कृपा है, जो कुछ तेरे ही पास था तू ने दे दिया'–माई को व्यर्थ में क्रोध आ गया, अपने पति से बोली 'भिखारी निर्लज्ज, प्रातःकाल ही बड़बड़ा रहा है। धन यौवन के मतवाले पति ने आवेग से नीचे उतर कर भिखारी को जोर से थप्पड़ मारा और कहा 'और बक'। भिखारी बेचारा चुप। धनी मतवाला प्रसन्न होकर आवेग से फिर महल पर चढ़ने लगा, ऊपर की पौरी चढ़कर सुनाने को ही था कि पांव फिसला और धड़ाम से नीचे भिखारी के पास आ गिरा तथा मुर्छित हो गया।

माई ने कहा–'भिखारी तेरा शाप लगा है।' भिखारी बोला–

अन्न मंगियासी तेरे आन बूहे।
तुस्सां थुक्किया ए वी इनायत कीती।
जद आखया थुक्कना नहीं चंगा।
उल्टा तुसां ने मेरी शिकायत कीती।
मेरे तेरे दी बहस दे विच आके।
तेरे खसम ने तेरी हमैत कीती।
मैं वी नहीं सां बहिन जी, खसम बाझों।
मेरे खसम ने मेरी हिमैत कीती।

उपदेश – ऐ अन्न धन के स्वामी मनुष्यों? तुम भी मनुष्य हो और प्रभु के मनुष्य को अपने जैसा मनुष्य समझा करो। डरो! डरो!! वह बड़ा जबर्दस्त है!!!

"युग निर्माण तथा चतुर्मुखी प्रगति की भावना से ओतप्रोत यह दिव्य ग्रंथ एक महान प्रकाश स्तम्भ है। ऋषि दयानन्द ने देश तथा समस्त विश्व को सत्यार्थप्रकाश के रूप में जो अविनश्वर वसीयत प्रदान की है यह उनकी प्राकाण्ड प्रतिभा का प्रतीक है। जिस ग्रन्थ ने लाखों आत्माओं को शक्ति प्रदान की।

(श्याम प्रसाद मुकरजी)

www.thearyasamaj.org

योगेश्वर श्रीकृष्ण

– सुभाष चन्द्र गुप्ता

योगेश्वर श्रीकृष्ण का जन्म आर्यावर्त्त (भारत वर्ष) की पुण्यभूमि में, आज से पांच सहस्त्र वर्ष पूर्व हुआ था। उनका हजारों वर्ष पुराना गीता–सन्देश आज भी उतना ही नूतन, समीचीन और अद्यतन है, जितना वह उस प्राचीन काल में था। उनका गीता–ज्ञान, एक मृतप्राय व्यक्ति में भी नवजीवन का संचार कर देता है : निराशा, हताशा, उदासीनता एवं विषाद को तिरोहित कर देता है; शान्ति और उल्लास से उसे आप्लावित और आप्यायित कर देता है।

श्रीकृष्ण के कुछ विशिष्ट गुणों का वर्णन

1. **महाभारत के निर्माता**–श्रीकृष्ण के समय में घर–घर में राजा मौजूद थे औरकेवल अपने ही स्वार्थ में संलग्न थे। श्रीकृष्ण ने भारत को विघटित करने वाले जरासंघ, कंस आदि दुष्ट राजाओं का विनाश करके, खण्ड–खण्ड भारत को अखण्ड करने का महान् कार्य किया।

2. **महान् कर्मयोगी**–कर्म–बन्धन के तीन कारण होते हैं–काम, क्रोध और लोभ। वह इन तीनों दोषों से मुक्त थे।

3. **स्वाभिमानी एवं निर्भीकप**जब श्रीकृष्ण सन्धि–प्रस्ताव लेकर दुर्योधन की सभा में पधारे, तब दुर्योधन का कपटपूर्ण व्यवहार देखकर, उन्होंने उसके आतिथ्य को अस्वीकार कर दिया। दुर्योधन के पूछने पर उनका उत्तर था : दूत अपना लक्ष्य सिद्ध होने पर ही भोजन और आतिथ्य स्वीकार करते हैं। दूसरा, घर पर भोजन दो ही कारणों से किया जाता है–स्नेह वश अथवा आपत्ति में पड़कर। "हे दुर्योधन! न तो तुम्हारा हमारे से स्नेह है और न हीहम ऐसी आपत्ति में हैं कि भूखों मर रहे हों।" ऐसी निर्भीकता और अनुपम स्वाभिमान श्रीकृष्ण ने उपरोक्त उत्तर द्वारा प्रदर्शित किया था।

4. **आदर्श गृहस्थी**–श्रीकृष्ण के गृहस्थ को इसलिए आदर्श कहा जाता है चूंकि उन्होंने बारह वर्ष के कठोर ब्रह्मचर्य का पालन करके प्रद्युम्न नामक दिव्य संतान पाई। उनका जीवन सभी गृहस्थियोंके लिए शिक्षा–प्रद है।

5. **सच्चे मित्र**–श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता जगत् प्रसिद्ध है। जब अर्जुन को समाचार मिला कि उसका प्यारा पुत्र अभिमन्यु मारा गया, उस समय उसने जयद्रथ के वध की (अगले दिन सूर्यास्त होने तक) प्रतिज्ञा कर डाली। किन्तु इसका पालन करना सरल नहीं था, चूंकि दुर्योधन ने जयद्रथ की सुरक्षा के सारे प्रबन्ध कर रखे थे। उस समय श्रीकृष्ण के निम्न वचनों में हम उनकी सच्ची मित्रता की स्पष्ट झलक देखते हैं–

"मुझे कुन्ती पुत्र अर्जुन से इतना अधिक स्नेह है कि उतना अपनी पत्नी, कुटुम्बीजनों तथा भाई–बन्धुओं से भी नहीं है।"

6. **नीति निपुण**–महाभारत के युद्ध में पाण्डवों की सफलता का मुख्य कारण था–श्रीकृष्ण का नीतिनैपुण्य। यदि वे अपनी नीति द्वारा पाण्डवों का पग–पग पर पथ–प्रदर्शन न करते, तो पाण्डव कहीं भी उलझकर असफल हो जाते। श्रीकृष्ण की नीति का निचोड़ है–'शठं शाठ्यं समाचरेत्'–कपटी के साथ कपट से वरतो और सरलों के साथ सरलता से।

7. **शालीन (नम्र), शिष्ट**–श्रीकृष्ण जब भी व्यास, कुन्ती तथा युधिष्ठिर से मिलते, तो नमस्ते करते थे और उनके चरण छूते थे। युद्ध के दौरान जब श्रीकृष्ण भीष्म के निवास स्थान पर गए, तब श्रीकृष्ण ने पाण्डवों सहित भीष्म को सिर झुकाकर प्रणाम किया।

8. **संध्या–हवन के प्रति दृढ़ निष्ठा**–(क) अभिमन्यु–वध के दिन सायंकाल, अपने शिविर में जाने से पूर्व अर्जुन और श्रीकृष्ण ने संध्या हवन किया। (ख) दूत कर्म पर जाते हुए, रास्ते में सायंकाल के समय रथ रोक कर संध्या की। (ग) हस्तिनापुर में कौरव–सभा में जाने से पूर्व सन्ध्या और अग्निहोत्र (हवन) किया। (घ) युधिष्ठिर की राजधानी में रात्रि–विश्राम के पश्चात् जब पहर रात्रि रहने पर श्रीकृष्ण जगे, तब उन्होंने प्रातः स्मरणीय मंत्रों से सनातन ब्रह्म का ध्यान कर, फिर स्नान किया। तत्पश्चात् प्रणव तथा गायत्री जाप एवं संध्या कर नित्य का होम किया। *(शांति. 53/1, 2–7)*

श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन–"परित्राणाय साधूनाम!"–सज्जनों की रक्षा के लिए, "विनाशाय च दुष्कृताम्"–दुष्टों के विनाश के लिए एवं "धर्म संस्थापनार्थाय"–धर्म की स्थापना के लिए ही था।

www.thearyasamaj.org

आर्य वीर विजय (मासिक) 25 अगस्त, 2013

HR/FBD/67/2013-2015 dt. 1.1.13
Reg. No. : 42323/84

सेवायाम्
श्रीमान्/श्रीमती

आर्य समाज, सैक्टर 7,
फरीदाबाद-121 006

उजली व चमकदार धुलाई

हाथ सुरक्षित

वनस्पति अखाद्य तेलों से निर्मित

निर्माता : **पुनीत उद्योग**

37- E, सैक्टर 6, फरीदाबाद-121006

दूरभाष : 0129-2241467, 4061389

ट्रेड मार्क मालिक :-

उत्तम कैमीकल उद्योग

प्लाट नं. 309, सैक्टर-24, फरीदाबाद पिन - 121006

आर्य वीर विजय, मनोहर लाल द्वारा आर्य वीर दल हरियाणा के लिए 'तप मिनी ऑफसैट प्रिंटर्स', 279 सेक्टर 7 मार्किट, फरीदाबाद से छपवाकर, आर्यसमाज मन्दिर, सैक्टर 7, फरीदाबाद-121006 से प्रेषित।